



नवसर्जन संस्कृति
हिन्दी



JioTV
CHENNAL NO.
2063



Jio Air Fiber



Jio Tv +



Jio Fiber



Daily Hunt



ebaba Tv



Dish Plus



DTH live OTT



Rock TV



Airtel



Amezone Fire



Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
नवसर्जन संस्कृति हिन्दी चैनल देखिये

संपादकीय

पैरा एशियाड में प्रेरक ऐतिहासिक सफलता

जगान के आईची-नागोया में आयोजित पैरा एशियाई खेलों में भारतीय खिलाड़ियों ने अपने असाधारण प्रदर्शन से देश का गौरव बढ़ाया है। इन खिलाड़ियों ने साबित कर दिया कि शारीरिक सीमाएं किसी व्यक्ति की प्रतिभा, पुछ्छासक्ति और सफलता की राह में स्थायी बाधा नहीं बन सकती। कड़ी मेहनत, अनुशासन, आत्मविश्वास और लक्ष्य के प्रति समर्पण के बल पर भारतीय पैरा खिलाड़ियों ने पदकों की ऐसी इबारत लिखी है, जिसने पूरे देश को गर्व करने का अवसर दिया है। इन खेलों में भारत ने कुल 114 पदक जीतकर अब तक का अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। इसमें 30 स्वर्ण और 35 रजत पदकों के साथ अन्य पदक भी शामिल रहे। वर्ष 2023 में आयोजित पैरा एशियाई खेलों में भारतीय खिलाड़ियों ने 108 पदक जीते थे। इस बार अपेक्षाकृत छोटे दल के बावजूद पदकों की संख्या में वृद्धि होना भारतीय खिलाड़ियों की प्रतिभा और तैयारियों का प्रमाण है। आईची-नागोया में भारतीय दल का प्रदर्शन केवल पदकों की संख्या तक सीमित नहीं रहा, बल्कि खिलाड़ियों ने अनेक स्पर्धाओं में एप कीर्तिमान स्थापित किए और पुराने पदकों की तोड़े। एशिया के विभिन्न देशों से आए खिलाड़ियों के बीच प्रतियर्स्था करते हुए भारतीय पैरा खिलाड़ियों ने यह दिखाया कि अवसर, प्रशिक्षण और प्रोत्साहन मिलने पर वे किसी भी स्तर पर अपनी क्षमता का प्रदर्शन कर सकते हैं। सामान्य एशियाई खेलों में भारतीय दल का पांचवें स्थान पर रहना और पैरा एशियाई खेलों में चौथा स्थान हासिल करना देश की खेल क्षमता के दो अलग-अलग पहलुओं को सामने लाता है। यह उपलब्धि बताती है कि भारतीय खेल जगत में पैरा खिलाड़ियों की भूमिका लगातार मजबूत हो रही है और उनकी मेहनत अंतरराष्ट्रीय मंच पर देश की प्रतिष्ठा बना रही है। इन खेलों में पैरा एथलेटिक्स भारतीय दल की सबसे मजबूत स्पर्धाओं में शामिल रहा, जहां खिलाड़ियों ने कुल 65 पदक अपने नाम किए। इसके अतिरिक्त बैडमिंटन, तैराकी और तीरंदाजी में भी खिलाड़ियों ने उल्लेखनीय प्रदर्शन किया। निशानेबाजी, टेबल टेनिस, जुडो और पावरलिफ्टिंग जैसी स्पर्धाओं में भी भारतीय खिलाड़ियों ने पदक जीतकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। प्रत्येक पदक के पीछे वर्षों का अभ्यास, शारीरिक और मानसिक चुनौतियों से मुकाबला तथा असफलताओं से उबरने की कहानी छिपी होती है। किसी खिलाड़ी के लिए अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में पहुंचना ही बड़ी उपलब्धि है, लेकिन वहां देश के लिए पदक जीतना उसके कठिन परिश्रम और दुर्लभ संकल्प का परिणाम होता है। पैरा खिलाड़ियों की सफलता को समझने के लिए उनके संघर्ष को भी समझना आवश्यक है। इन खिलाड़ियों में अनेक ऐसे होते हैं, जिन्हें रोजमर्रा के जीवन में ही कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। आवागमन की असुविधा, खेल मैदानों तक पहुंच की कमी, विशेष उपकरणों की अनुपलब्धता और प्रशिक्षित प्रशिक्षकों का अभाव उनकी चुनौतियों को और बढ़ा देता है। इसके बावजूद जब वे अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में उतरते हैं और दुनिया के श्रेष्ठ खिलाड़ियों को चुनौती देते हैं, तो उनकी उपलब्धि का महत्व और बढ़ जाता है। उनकी सफलता इस बात का प्रमाण है कि किसी व्यक्ति की वास्तविक क्षमता का आकलन उसकी शारीरिक स्थिति के आधार पर नहीं, बल्कि उसके साहस, परिश्रम और उपलब्धियों के आधार पर किया जाना चाहिए। भारतीय पैरा खिलाड़ियों की यह उपलब्धि समाज के लिए भी एक महत्वपूर्ण संदेश है। आज भी अनेक स्थानों पर दिव्यांग व्यक्तियों को दया की दृष्टि से देखा जाता है। उन्हें समान अवसर देने के बजाय उनकी सीमाओं को अधिक महत्व दिया जाता है। यह दृष्टिकोण बदलना जरूरी है। दिव्यांगजन समाज पर बोझ नहीं, बल्कि उसकी महत्वपूर्ण शक्ति हैं। उचित अवसर, समान और सुविधाएं मिलने पर वे शिक्षा, खेल, विज्ञान, कला, व्यवसाय और अन्य क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान दे सकते हैं। पैरा एशियाई खेलों में भारतीय खिलाड़ियों की सफलता इसी सोच को मजबूत करती है। हमें यह समझना होगा कि किसी व्यक्ति को उसकी शारीरिक स्थिति के कारण कमतर आंकना न केवल अनुचित है, बल्कि उसकी संभावनाओं को सीमित करने जैसा भी है। खिलाड़ियों की उपलब्धियों पर उत्सव मनाना आवश्यक है, लेकिन उनके संघर्ष को केवल पदक समारोहों और समान कार्यक्रमों तक सीमित नहीं रखा जाना चाहिए। वास्तविक सम्मान तब होगा, जब उनके लिए जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समान अवसर सुनिश्चित किए जाएंगे। देश के छोटे-बड़े शहरों में ऐसे खेल परिसर विकसित किए जाएं, जहां पढ़ाई, जहां पैरा खिलाड़ी आसानी से पहुंच सके और अपनी प्रतिभा को निखार सकें। खेल मैदान, स्विमिंग पूल, प्रशिक्षण केंद्र, जिम और अन्य सुविधाएं दिव्यांगजनों के अनुकूल बनाई जानी चाहिए। प्रशिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण दिया जाए तथा खिलाड़ियों को आवश्यक उपकरण, पौष्टिक आहार, चिकित्सा सहायता और प्रतिযোগिताओं में भाग लेने के लिए पर्याप्त आर्थिक सहयोग उपलब्ध कराया जाए।

अभियान

राजनीति में विरोधियों के प्रति तत्त्व होते तेवर

“बीते सप्ताह आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने अपने भाषण में सत्ता में बदलाव की संभावना को नकारा। इसके अलावा बंगाल में दुर्गा पूजा के दौरान वामपंथी बुकस्टॉलों को निशाना बनाने की घटना हुई। लेकिन शासन की प्रतिक्रिया नहीं आई। हालांकि एक मंत्री का वाकयें की निंदा करना लोकतंत्र की भावना के अनुकूल ही है जिसके तहत

प्रेरणा

अमूल्य है मानव जीवन, सद्कर्मों से ही मिलेगा सच्चा सुख

भारतीय संस्कृति में मनुष्य जीवन को केवल सांसारिक सुखों की प्राप्ति का साधन नहीं, बल्कि आत्मा के उत्थात और परम सत्य को जानने का अवसर माना गया है। जीवन में धन, संपत्ति, प्रतिष्ठा और सुविधाओं का अपना महत्व है, लेकिन इन उपलब्धियों के बीच यदि मनुष्य अपने अस्तित्व के उद्देश्य को ही भूल जाता है, तो उसकी सारी सफलता अधूरी रह जाती है। मनुष्य को बुद्धि, विवेक और निर्णय लेने की क्षमता मिली है। वह अपने कर्मों से दूसरों के जीवन में खुशियां ला सकता है, अपने भीतर की बुराइयों को दूर कर सकता है और सत्य के मार्ग पर चलकर आत्मिक शांति प्राप्त कर सकता है। यही विशेषताएं मानव जीवन को दुर्लभ बनाती हैं। जीवन की वास्तविक सफलता इस बात में नहीं है कि हमने कितना अर्जित किया, बल्कि इस बात में है कि हमने अपने जीवन को कितना सार्थक बनाया। पौराणिक प्रसंग के अनुसार, एक बार देवर्षि नादर ने भगवान विष्णु से पूछा कि प्रभु, देवताओं को स्वर्ग में अनेक प्रकार के सुख और सुविधाएं प्राप्त हैं। वे शक्तिशाली हैं और उन्हें दिव्य वैभव भी मिला हुआ है। फिर भी शास्त्रों में मनुष्य को इतना महत्वपूर्ण क्यों बताया गया है? क्या मनुष्य का जीवन देवताओं के जीवन से भी अधिक मूल्यवान है? नादर के प्रश्न को सुनकर भगवान विष्णु ने उन्हें समझाया कि देवताओं को उनके पुण्य कर्मों के फलस्वरूप स्वर्ग के सुख प्राप्त होते हैं, लेकिन मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी विशेषता कर्म करने और अपने आचरण में परिवर्तन लाने की स्वतंत्रता है। मनुष्य अपने विवेक से यह चुन सकता है कि उसे किस मार्ग पर चलना है। वह अपने व्यवहार को

पिछले हफ्ते की शुरुआत में नागपुर में जब तक आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने अपना वार्षिक विजयादशमी भाषण दिया, जिसमें उन्होंने 'सत्ता परिवर्तन' की संभावना को खारिज करते हुए प्रधानमंत्री मोदी और बीजेपी के प्रति संगठन के समर्थन को रेखांकित किया,तब तक, बंगाल में दुर्गा पूजा पंडालों के आसपास लगे वामपंथी साहित्य के बुकस्टॉलों में आग लगा दी जा चुकी थी। किताबों के साथ हुए इस किस्म के सलूक ने, बेशक, आपको रे ब्रैडबरी के 1953 के मशहूर उपन्यास 'फरिनेहाइट 451' की याद दिलाई होगी,इस किताब का उपशीर्षक है- 'वह तापमान, जिस पर किताबों का कागज आग पकड़ता है और जल जाता है'। यह उपन्यास अमेरिका में मैकार्थी युग के चरम पर लिखा गया था। इसमें नाजी जर्मनी में किताबों को जलाए जाने और सोवियत संघ की 'गुलाग' जेलों में हुए दमन का जिक्र है, जब 'राष्ट्र-विरोधी' माने जाने वाले साहित्य को पढ़ने, लिखने या उस पर विचार करने का मतलब था कड़ी सजा आमंत्रित करना।बेशक, बंगाल की इस घटना की तुलना उस उपन्यास से करना कुछ बढ़ा-चढ़ाकर देखना हो सकता है। जो भी हो, राज्य के वित्त मंत्री स्वप्न दासगुप्ता ने, जिन्होंने यकीनन मुख्यमंत्री सुवेंदु अधिकारी के मुकाबले कहीं ज्यादा किताबें पढ़ी हैं—अपनी सरकार की कुछ हद तक लाज बचा ली, जब उन्होंने कहा कि हालिया दुर्गा पूजा के दौरान जिस तरह से कुछ उपद्रवियों और गुंडों ने वामपंथी बुकस्टॉलों को तहस-नहस किया है, उसे देखकर उनका सिर शर्म से झुक जाता है। (इस मामले को गहराई से समझने के लिए, आप पिछले हफ्ते 'द ट्रिब्यून' में छपा वरिष्ठ पत्रकार शिखा दासगुप्ता का लेख पढ़ सकते हैं।) उपद्रवियों ने गत सप्ताह हिम्मत कर सच बोला है क्योंकि वे समझते हैं कि 'बंगाल' का विचार सुवेंदु अधिकारी से कहीं बड़ा है -



ठीक वैसे ही, जैसे कभी सीपीआई (एम) के दिग्गज नेता और मुख्यमंत्री रहे ज्योति बसु ने 1996 में अपनी ही पार्टी के खिलाफ आवाज उठाई थी। तब उन्होंने उनको प्रधानमंत्री बनने से रोके जाने के पार्टी के फैसले को एक 'ऐतिहासिक भूल' करार दिया था। यहां भी कहीं-बल्कि समस्या यह है कि आज भारत में 'अलग' होने, धारा के विपरीत तैरने का विचार धीरे-धीरे खत्म होता जा रहा है। आजकल राजनीति में गुस्सा बहुत ज्यादा है। शायद हर किसी के पास गुस्सा होने की कोई न कोई वजह है। यही कारण है कि दिल्ली की सड़कों पर होने वाले विरोध-प्रदर्शन-जब भी पुलिस होने दे-उसके कुछ हिस्से, एक सुखद बदलाव के तरह लगते हैं। मिरांडा हाउस की छात्राओं का 'एक कनौड़ी, दो सोमोसा' वाला नारा इसलिए असरदार रहा क्योंकि वे दिल्ली पुलिस पर

से जुड़ा मशहूर कथन लंबे समय तक सच माना जाता रहा : 'बंगाल जो आज सोचता है, शेष भारत कल सोचता है'। (हालांकि, गोखले ने 1905 में ऐसा नहीं कहा था।) फिर भी, समस्या बंगाल या बंगालियों के साथ नहीं है-भले ही सुवेंदु अधिकारी कुछ भी कहें-बल्कि समस्या यह है कि आज भारत में 'अलग' होने, धारा के विपरीत तैरने का विचार धीरे-धीरे खत्म होता जा रहा है। आजकल राजनीति में गुस्सा बहुत ज्यादा है। शायद हर किसी के पास गुस्सा होने की कोई न कोई वजह है। यही कारण है कि दिल्ली की सड़कों पर होने वाले विरोध-प्रदर्शन-जब भी पुलिस होने दे-उसके कुछ हिस्से, एक सुखद बदलाव के तरह लगते हैं। मिरांडा हाउस की छात्राओं का 'एक कनौड़ी, दो सोमोसा' वाला नारा इसलिए असरदार रहा क्योंकि वे दिल्ली पुलिस पर

तंत्र कस रही थी 'कि जब हमें आपकी सबसे ज्यादा जरूरत होती है, तब आप कहां होते हैं' ? या फिर जब नेहा बोरा उन पुलिसकर्मियों से चाय की मांग करती है, जिन्होंने उन्हें और इनके साथियों को हिरासत में ले रखा है :? छात्रों ने वह पुरानी कहावत पकड़ ली है 'जब आपका विरोधी आपसे कहीं ज्यादा ताकतवर हो, तो उसको हास्य से जीत लो'। तथापि, दिल्ली में कुछ चीजें पहले ही बदल रही हैं। मिजाज सख्त होता जा रहा है। यह साफ है कि सरकार दोतरफा रणनीति लगा रही है - पहला, हर किस्म के विरोध-प्रदर्शन को न होने देना, चाहे वह सड़कों पर होने वाले प्रदर्शन हों या विरोध दर्शाने वाले अन्य माध्यम, जैसे कि प्रदर्शनों की छवियों वाली तस्वीरों की प्रदर्शनी। अब मस्ती और हल्के-फुल्केपन का समय सिकुड़ रहा है। दूसरा, मुख्य विपक्षी दल को निशाना बनाना। भले ही देश के ज्यादातर हिस्सों में कांग्रेस सिकुड़ी पड़ी है, लेकिन प्रधानमंत्री को फिर से खड़ा करने की क्षमता है। कोई इत्तेफाक नहीं कि बीते गुरुवार एनटीटीवी वर्ल्ड समिट में मोदी ने अपनी टिप्पणियों में कांग्रेस सदसियों के बढ़ते प्रभाव की बात कही। यह भी कोई इत्तेफाक नहीं कि बीजेपी इस समय राहुल गांधी के कथित तौर पर विदेश में छुट्टियां मनाने को - माना जा रहा है कि वे वियतनाम में हैं - निशाना बना रही है और पूछ रही है कि वहां पर वे किससे मिल रहे हैं। यह एक अलग बात है कि ऐसे नाजुक समय में विदेश जाकर छुट्टी मनाने का कथित फैसला करके राहुल गांधी खुद ही शेर की मांद में चले गए हैं - जिससे पूरे विपक्ष की रणनीति पर ही सवाल खड़े हो गए हैं (या फिर अगर वे वहां नहीं हैं, तो भी कांग्रेस में कोई इस बात की पुष्टि या खंडन नहीं कर

मोदी का नाम लेकर 193 देशों के सामने ट्रंप की बेइज्जती करने वाले ने कैसे ब्राजील में पलट दी बाजी,लैटिन अमेरिका की राजनीति पर क्या पड़ेगा इस जीत का असर?

लैटिन अमेरिका के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश ब्राजील में जहां राष्ट्रपति चुनाव के बेहद में कांटे के मुकाबले में मौजूदा राष्ट्रपति लुइज़ इनासियो लूला दा सिल्वा ने ऐतिहासिक जीत दर्ज कर ली है। लेकिन इस जीत के साथ ही ब्राजील के एक सियासी बंबर्डर भी शुरू हो गया है। पूर्व राष्ट्रपति जायर बोलसुनारो के बेटे और विपक्षी उम्मीदवार फ्लेवियो बोलसुनारो ने नतीजों को मानने से साफ इंकार कर दिया है। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट और चुनाव प्रक्रिया पर सीधे तौर पर धांधली और निर्माणों से छेड़छाड़ का गंभीर आरोप लगाते हुए चुनावों को रद्द करने की मांग कर दी है। पहले रउड में पिछड़े फिर फोरवार्ड की लड़ाई चल रही है। असली कहानी है उनकी चुनावी वापसी। ब्राजील की संप्रभुता और अमेरिका के साथ रिश्तों का भविष्य। क्योंकि लूला खुले तौर पर ट्रंप की कई नीतियों की आलोचना करते रहे हैं। वहीं उनके प्रतिद्वंदी फ्लावियो बालसुनारो दक्षिणपंथी नेता और पूर्व राष्ट्रपति जाय बोलसुनारो के बेटे हैं। ऐसे में लूला की जीत को ट्रंप की राजनीति के लिए झटके के तौर पर देखा जा रहा है। लेकिन क्या यह वाकई ट्रंप की हार है? क्या ब्राजील ने अमेरिका को साफ संदेश दे दिया है? कि वो किसी के दावों में नहीं आया और पहले दौर में पीछे रहने के बाद लूला ने आखिर में जो है बाजी कैसे पलट दी? इसने कर घमंड और दादगिरी को कैसे ख़ूबसूरत कर डाला और लूला का चौथी बार ब्राजील का राष्ट्रपति बनना लैटिन अमेरिका के राजनीति पर कैसा संभावित असर डालने वाला है।ब्राजील के सुप्रीमफिर इलेक्टोरल कोर्ट यानी ट्रीएसई की तरफ से जारी आधिकारिक नतीजों के मुताबिक वोटों की गिनती पूरी हो चुकी है। अगर नतीजों को अंतिम ठीक ठीक डालें तो सत्ताधारी वर्कस पार्टी के नेता लूला डसिलवा को 51.78% वैध वोट मिले हैं। वहीं लिबरल पार्टी के उम्मीदवार फ्लेवियो को 48.23% वोट हासिल हुए हैं। यानी कि जीत और हार का अंतर महज 3.5% का है। यह अंतर दिखाता है कि ब्राजील के जनता वैचारिक रूप से दो पक्ष हो चुकी है और मुकाबला आखिरी वोट तक

कितना करीबी था। इस चुनाव की सबसे दिलचस्प बात यह रही कि पहले दौर में लूला दसिलवा पीछे चल रहे थे। 4 अक्टूबर को हुए पहले राउंड के मतदान में फ्लेवियो बोलसुनारो 47.03% वोटों के साथ बहुत बनाए हुए थे। जबकि लूला को 45% 16% वोट मिले थे। उस वक़्त ऐसा लग रहा था कि दक्षिणपंथी लहर लूला की सत्ता को उखाड़ फेंकेगी। लेकिन उसके बाद लैटिन अमेरिका में तीन हफ्तों तक चला आक्रामक चुनाव प्रचार। लूला ने अपने मजदूर वर्ग के जनाधार पूर्वोत्तर के गढ़ और आम जनता के बीच जमीन नापी। दूसरे दौर यानी रन ऑफ मांग कर दी है। पहले रउड में पिछड़े फिर फोरवार्ड की लड़ाई चल रही है। असली कहानी है उनकी चुनावी वापसी। ब्राजील की संप्रभुता और अमेरिका के साथ रिश्तों का भविष्य। क्योंकि लूला खुले तौर पर ट्रंप की कई नीतियों की आलोचना करते रहे हैं। वहीं उनके प्रतिद्वंदी फ्लावियो बालसुनारो दक्षिणपंथी नेता और पूर्व राष्ट्रपति जाय बोलसुनारो के बेटे हैं। ऐसे में लूला की जीत को ट्रंप की राजनीति के लिए झटके के तौर पर देखा जा रहा है। लेकिन क्या यह वाकई ट्रंप की हार है? क्या ब्राजील ने अमेरिका को साफ संदेश दे दिया है? कि वो किसी के दावों में नहीं आया और पहले दौर में पीछे रहने के बाद लूला ने आखिर में जो है बाजी कैसे पलट दी? इसने कर घमंड और दादगिरी को कैसे ख़ूबसूरत कर डाला और लूला का चौथी बार ब्राजील का राष्ट्रपति बनना लैटिन अमेरिका के राजनीति पर कैसा संभावित असर डालने वाला है।ब्राजील के सुप्रीमफिर इलेक्टोरल कोर्ट यानी ट्रीएसई की तरफ से जारी आधिकारिक नतीजों के मुताबिक वोटों की गिनती पूरी हो चुकी है। अगर नतीजों को अंतिम ठीक ठीक डालें तो सत्ताधारी वर्कस पार्टी के नेता लूला डसिलवा को 51.78% वैध वोट मिले हैं। वहीं लिबरल पार्टी के उम्मीदवार फ्लेवियो को 48.23% वोट हासिल हुए हैं। यानी कि जीत और हार का अंतर महज 3.5% का है। यह अंतर दिखाता है कि ब्राजील के जनता वैचारिक रूप से दो पक्ष हो चुकी है और मुकाबला आखिरी वोट तक

साहस जुटाए, तो उसका जीवन बेहतर बन सकता है। आत्मसुधार की शुरुआत दूसरों को बदलने से नहीं, बल्कि स्वयं को समझने से होती है। मानव जीवन की सार्थकता का एक महत्वपूर्ण आधार सेवा और परोपकार भी है। संसार में प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार दूसरों के लिए उपयोगी बन सकता है। किसी जरूरतमंद को भोजन उपलब्ध करना, किसी गरीब विद्यार्थी को पढ़ाई में सहायता करना, दुखी व्यक्ति की बात ध्यानपूर्वक सुनना या किसी असहाय को उचित मार्ग दिखाना भी महान कार्य हैं। सेवा का मूल्य उसकी मात्रा से नहीं, बल्कि उसके पीछे छिपी भावना से निर्धारित होता है। जो व्यक्ति बिना किसी स्वार्थ के दूसरों की सहायता करता है, उसके भीतर करुणा और संवेदनशीलता का विकास होता है। इससे समाज में विश्वास और सहयोग की भावना मजबूत होती है। मनुष्य अपने जीवन को जितना दूसरों के हित से जोड़ता है, उतना ही उसके अस्तित्व का व्यापक अर्थ सामने आता है। धार्मिक आस्था और आध्यात्मिक साधना भी व्यक्ति को जीवन का उद्देश्य समझने में सहायता करती हैं। भगवान का स्मरण, ध्यान, प्रार्थना और धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन अपने अपने विचारों की समीक्षा करने का अवसर देते हैं। हालांकि आध्यात्मिकता का अर्थ केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं है। यदि व्यक्ति मंदिर में जाकर प्रार्थना करता है, लेकिन बाहर निकलकर दूसरों के साथ छल करता है, तो उसे अपने आचरण पर विचार करना चाहिए। धर्म का वास्तविक संदेश सत्य, करुणा, न्याय, क्षमा और सदाचार जैसे मूल्यों को जीवन में उतारना है। दूसरों की भावनाओं का सम्मान करना, किसी के अधिकारों

को हनन न करना और कठिन परिस्थितियों में भी ईमानदारी बनाए रखना भी आध्यात्मिक जीवन के महत्वपूर्ण अंग हैं। इसके साथ ही मनुष्य को समय के महत्व को समझना चाहिए। जीवन में बहुत से अवसर ऐसे होते हैं, जिन्हें एक बार खो देने के बाद दोबारा प्राप्त करना कठिन हो जाता है। माता-पिता की सेवा, परिवार के साथ बिताया गया समय, बच्चों को दिए गए संस्कार और जरूरतमंदों की सहायता जैसे कार्यों को भविष्य के लिाए तालना उचित नहीं है। मनुष्य को वतमान की खुशियों को नजरअंदाज कर देता है। वह छोटी-छोटी बातों में उलझकर अपने सपने भूल जाता है और सहयोगी को पहचान नहीं पाता। इसलिए आवश्यक है कि व्यक्ति अपने लक्ष्य निर्धारित करे, मेहनत करे और साथ ही वर्तमान जीवन के प्रति भी सजग रहे। संतुलित दृष्टिकोण से ही सांसारिक जिम्मेदारियों और आत्मिक उन्नति के बीच सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है। मनुष्य जन्म का उद्देश्य संसार से भागना नहीं, बल्कि संसार में रहते हुए अपने कर्तव्यों को ईमानदारी से निभाना है। परिवार का पालन-पोषण करना, आजीविका अर्जित करना, समाज के प्रति जिम्मेदार रहना और अपने ज्ञान का उपयोग सकारात्मक कार्यों में करना भी जीवन की सार्थकता का हिस्सा है। जब इन सभी कार्यों के साथ व्यक्ति अपने भीतर विनम्रता, संयम और सद्भाव बनाए रखता है, तब उसकी उपलब्धियां केवल व्यक्तिगत सफलता तक सीमित नहीं रहतीं। वह दूसरों के लिए भी प्रेरणा बन जाता है।

कार्तिक मास: आस्था, परंपरा, स्नान-ध्यान और दान-पुण्य का अनुपम संगम

भारतीय संस्कृति में कार्तिक मास का विशेष धार्मिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व है। यह ऐसा मास है, जिसमें दीपावली की जगमगाहट, मोहनी पुराण की परंपरा, भाई करने का प्रयास किया। उधर, हिमालय की पुरी पावती भगवान शिव को पति रूप में प्राप्त करने के लिए कठोर तपस्या करने लगीं। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उनसे विवाह किया। कालांतर में शिव-पावती के पुत्र कार्तिकेय का जन्म हुआ। कार्तिकेय ने देवताओं का सेनापतित्व संभालते हुए तारकासुर का वध किया और देवताओं को उसके अंतक से मुक्ति दिलाई। इसी कथा से कार्तिकेय के पराक्रम और कार्तिक मास की धार्मिक महत्ता को जोड़ा जाता है। कार्तिक मास का आरंभ होते ही धार्मिक गतिविधियों में तेजी आ जाती है। इस महीने में प्राकृतिक स्नान, सूर्य को अर्घ्य देना, भगवान विष्णु की पूजा करना और तुलसी के समक्ष दीपक जलाना विशेष महत्व रखता है। अनेक श्रद्धालु पूरे महीने नियमित रूप से स्नान-ध्यान और पूजा-पाठ करते हैं। धार्मिक मान्यता के अनुसार, कार्तिक में पवित्र नदियों में स्नान करने से पुण्य की प्राप्ति होती है। विशेष रूप से कार्तिक पूर्णिमा पर गंगा, यमुना और अन्य पवित्र नदियों में स्नान के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं। प्रयागज, वाराणसी, हरिद्वार और अन्य तीर्थस्थलों पर इस अवसर पर विशेष धार्मिक आयोजन होते हैं। हालांकि

स्नान का महत्व केवल नदी में डुबकी लगाने तक सीमित नहीं है। इसका व्यापक संदेश शरीर और मन की शुद्धता, अनुशासन तथा जीवन में पवित्र विचारों को स्थान देने से भी जुड़ा है। कार्तिक मास के सबसे प्रमुख पर्वों में दीपावली का विशेष स्थान है। अमावस्या की अंधेरी रात में दीपों की चमकियां प्रकाश का ऐसा दृश्य प्रस्तुत करती हैं, जो भारतीय संस्कृति की पहचान बन चुका है। दीपावली को अंधकार पर प्रकाश, अज्ञान पर ज्ञान और निराशा पर आशा की विजय का प्रतीक माना जाता है। प्रचलित मान्यता के अनुसार, भगवान राम चौदह वर्ष का वनवास पूरा करके और धार्मिक महत्ता को जोड़ा जाता थे। उनके स्वागत में अयोध्यावासियों ने धी के दीप जलाकर नगर को प्रकाश से भर दिया था। इसी प्रसंग को दीपावली की परंपरा से जोड़ा जाता है। इसके साथ ही यह पर्व माता लक्ष्मी और भगवान गणेश की पूजा, सुख-समृद्धि की कामना तथा घर-परिवार में मंगल कठिनें और तालाबों के किनारे अस्ताचलगामी तथा उदीयमान सूर्य को अर्घ्य देते हैं। इस पर्व की विशेषता इसकी सादगी, पवित्रता और सामूहिक सहभागिता है। इसमें स्वच्छता, संयम और प्रकृति के प्रति सम्मान को विशेष महत्व दिया जाता है। सूर्य को जीवन, ऊर्जा और प्रकाश का स्रोत मानकर उनकी उपासना करना मनुष्य को प्रकृति पर अपनी निर्भरता का

जात है। भगवान कृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत उठाकर ब्रजवासियों की रक्षा करने की कथा इस पर्व की प्रमुख धार्मिक मान्यता है। यह परंपरा मनुष्य को प्रकृति के प्रति कृतज्ञता और पर्यावरण संरक्षण की प्रेरणा भी देती है। इसके बाद भाई दूज का पर्व भाई-बहन के प्रेम और विश्वास को मजबूत करता है। इस दिन बहनें अपने भाइयों के माथे पर तिलक लगाकर उनकी लंबी आयु और सुख-समृद्धि की कामना करती हैं। बदले में भाई भी अपनी बहनों के प्रति प्रेम, सम्मान और सुखका भाव प्रकट करते हैं। इस प्रकार कार्तिक मास धार्मिक आस्था के साथ पारिवारिक संबंधों को भी नई ऊर्जा प्रदान करता है। कार्तिक मास में छठ महापर्व का महत्व भी अत्यंत व्यापक है। विशेष रूप से विहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश, झारखंड और देश के अनेक अन्य हिस्सों में श्रद्धालु इस पर्व को बड़ी श्रद्धा और अनुशासन के साथ मनाते हैं। छठ में सूर्यदेव और छठी मैया की उपासना की जाती है। प्रती कठिनें और तालाबों के किनारे अस्ताचलगामी तथा उदीयमान सूर्य को अर्घ्य देते हैं। इस पर्व की विशेषता इसकी सादगी, पवित्रता और सामूहिक सहभागिता है। इसमें स्वच्छता, संयम और प्रकृति के प्रति सम्मान को विशेष महत्व दिया जाता है। सूर्य को जीवन, ऊर्जा और प्रकाश का स्रोत मानकर उनकी उपासना करना मनुष्य को प्रकृति पर अपनी निर्भरता का

बोध कराता है। छठ के अवसर पर घाटों की सफाई, सामूहिक व्यस्तथा और परिवारों की भागीदारी सामाजिक एकाता का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करती है। कार्तिक मास में तुलसी पूजा और तुलसी विवाह की परंपरा भी विशेष रूप से प्रचलित है। हिंदू परिवारों में तुलसी के पौधे को पवित्र माना जाता है और अनेक वर्षों में प्रतिदिन उसके समक्ष दीपक जलाया जाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार, तुलसी भगवान विष्णु को मंत्र हैं। देवोत्थानी या देवप्रभुधिनी एकादशी के अवसर पर तुलसी विवाह का आयोजन किया जाता है। इस दिन भगवान विष्णु के शालिग्राम स्वरूप और माता तुलसी का विवाह पारंपरिक रीति-रिवाजों के साथ संपन्न कराया जाता है। कई क्षेत्रों में गन्ने से मंडप बनाकर विवाह की रस्में निभाई जाते हैं। मान्यता है कि इस एकादशी पर भगवान विष्णु अपनी चार महीने की योगनिद्रा से जागते हैं और इसके साथ मार्गलिक कार्यों की शुरुआत का समय आता है। तुलसी विवाह केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि परिवार और समाज को परंपराओं से जोड़ने का अवसर भी है। इससे लोकगीतों, रीति-रिवाजों और सामूहिक उत्सवों की परंपरा जीवित रहती है। लोकजीवन में कार्तिक मास का एक दूसरा रूप भी दिखाई देता है, जिसका संबंध कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था से रहा है। पुराने समय में किसानों के लिए यह महीना खेतों

की देखभाल, जुताई और आगामी फसलों की तैयारी का महत्वपूर्ण समय हुआ करता था। ग्रामीण समाज में प्रचलित कहावतें कार्तिक की मेहनत और कृषि कार्यों की अनिवार्यता को स्पष्ट करती थीं। कहा जाता था, 'तेरह कातिक, तीन अभाद'। इसका आशय यह था कि कार्तिक के दिनों में किसान को कठिन परिश्रम करना पड़ता है। एक अन्य लोककथन में रात तक खेत जोतने और समय व्यर्थ न गंवाने की सीख दी जाती थी। इन कहावतों के पीछे कृषि संबंधी अनुभव और आने वाले महीनों की आवश्यकताओं की समझ छिपी थी। किसानों को मालूम था कि समय पर मेहनत नहीं की गई, तो भविष्य में अनाज की कमी का सामना करना पड़ सकता है। इस प्रकार कार्तिक मास धार्मिक गतिविधियों के साथ श्रम, अनुशासन और जातिवैयक्तिक महत्व को भी रेखांकित करता है। कार्तिक पूर्णिमा इस महीने का एक और प्रमुख धार्मिक अवसर है। इसे त्रिपुरी पूर्णिमा और देव दीपावली के नाम से भी जाना जाता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार, भगवान शिव ने इसी दिन त्रिपुरासुर का वध किया था, जिसके बाद वे त्रिपुरारी कहलाए। कुछ धार्मिक कथाओं में भगवान विष्णु के मनस्य अवतार और राधा-कृष्ण की लीलाओं का संबंध भी कार्तिक पूर्णिमा से जोड़ा जाता है। वाराणसी में देव दीपावली के अवसर पर गंगा के घाटों को दीपों से सजाया जाता है।

वन से विकास : व्यारा वन विभाग के ‘वनश्री मॉडल’ से आदिवासी महिलाएँ बनीं आत्मनिर्भर; वार्षिक 1 करोड़ रुपए से अधिक का टर्नओवर

आदिवासी नारी शक्ति का अनूठा उदय : व्यारा के जंगलों में ‘वनश्री रेस्टोरेंट’ से 50 से अधिक महिलाओं के जीवन में आया आर्थिक-सामाजिक परिवर्तन

गांधीनगर : गुजरात के व्यारा वन विभाग द्वारा लागू किया गया ‘वनश्री मॉडल’ आदिवासी क्षेत्रों में महिला सशक्तीकरण, स्थानीय उत्पादों की बिक्री और पर्यटन आधारित रोजगार का सफल उदाहरण बन रहा है। वन पर्यटन को स्थानीय लोगों की आजीविका से जोड़कर विकसित किए गए इस मॉडल अंतर्गत चार वनश्री रेस्टोरेंट कार्यरत हैं, जिनका संयुक्त वार्षिक टर्नओवर 1 करोड़ रुपए से अधिक है। इस पहल से 50 से अधिक स्थानीय महिलाएँ सीधे तौर पर जुड़ी हुई हैं, जबकि प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार के माध्यम से लगभग 100 परिवारों को लाभ मिल रहा है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन तथा वन मंत्री श्री अर्जुन मोदवाडिया और राज्य वन मंत्री श्री प्रवीण माळी के नेतृत्व में वन, मानव और समृद्धि को जोड़ने वाले इस अनूठे मॉडल के माध्यम से आज आदिवासी महिलाएँ मजदूरी से मुक्त होकर स्थानीय अर्थव्यवस्था की मुख्यधारा में उद्यमी के रूप में उभरकर आई हैं।

सूरत वन वृत्त के वन संरक्षक पुनीत

नैय्यर (आईएफएस) ने कहा, “सूरत वन वृत्त अंतर्गत आने वाले व्यारा वन विभाग में कार्यरत चार ‘वनश्री’ रेस्टोरेंट का संचालन स्थानीय महिला स्वयं-सहायता समूह करते हैं। इन रेस्टोरेंट में आने वाले पर्यटकों को नागली (रागी) की रोटी, परंपरागत दालें, नागली के लड्डू सहित स्थानीय व्यंजन परोसे जाते हैं। ये रेस्टोरेंट आदिवासी समुदाय के परंपरागत व्यंजनों को प्रोत्साहन देते हैं और स्थानीय महिलाओं को स्वरोजगार के अवसर भी प्रदान करते हैं।”

व्यारा वन विभाग के उप वन संरक्षक सचिन गुप्ता (आईएफएस) ने कहा, “‘वनश्री’ मॉडल आदिवासी महिलाओं के सशक्तीकरण का प्रतीक बन गया है। यहाँ उन्हें रोजगार के साथ-साथ बिजनेस लीडर बनने का प्रशिक्षण भी मिलता है। जो महिलाएँ कभी मजदूरी करती थीं, वे अब स्वतंत्र रूप से व्यावसायिक मॉडल चला रही हैं। आज स्वयं-सहायता समूहों यानी सखी मंडलों के माध्यम से ये महिलाएँ अपने रेस्टोरेंट और कारोबार का सफल संचालन कर रही हैं। इस मॉडल ने उनके जीवन में स्थिरता, आत्मसम्मान



और निर्णय लेने की क्षमता प्रदान की है।” वित्तीय सुरक्षा एवं सम्मान के साथ स्थिर मासिक आय मिलने से आदिवासी परिवार अपने बच्चों को उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों और कॉलेजों में पढ़ने के लिए भेज रहे हैं। इतना ही नहीं, वित्तीय आत्मनिर्भरता के कारण चिकित्सा संबंधी इमर्जेंसी के समय दूसरों पर निर्भर नहीं रहना पड़ता और परिवारों के लिए समय पर उपचार संभव हो पाया है। इन रेस्टोरेंट के साथ-साथ ये महिलाएँ स्थानीय कृषि उत्पादों की बिक्री भी करती हैं और आय अर्जित करती हैं।

प्रतिक्रिया

करंजवेल गाँव के ‘हेतवी सखी मंडल’ की एक सदस्य अपने अनुभव के बारे में कहती हैं, “‘वनश्री’ से पहले हमारी कोई निश्चित आय नहीं थी। आज मैं पूरा रेस्टोरेंट चलाती हूँ और अपने कर्मचारियों को वेतन देती हूँ। यह वास्तविक बदलाव है।”

महिलाओं द्वारा संचालित चार ‘वनश्री रेस्टोरेंट’ का सफल प्रभाव

व्यारा वन विभाग में फैले चार वनश्री रेस्टोरेंट पर्यटकों को परंपरागत आदिवासी

व्यंजन परोसते हैं और स्थानीय महिला सखी मंडलों के लिए स्थायी आय के अवसर पैदा करते हैं।

चार वनश्री रेस्टोरेंट के बारे में

► 1. व्यारा वनश्री : करंजवेल गाँव का ‘हेतवी सखी मंडल’ इस केन्द्र का संचालन करता है। ग्रामीण महिलाओं का यह समूह शहरी फूड एंटरप्राइज चलाता है, जहाँ प्रतिदिन सैकड़ों आगंतुकों को नागली की रोटी, पारंपरिक दालें, नागली के लड्डू और स्थानीय व्यंजन परोसे जाते हैं। इसका वार्षिक कारोबार 53 लाख रुपए है।

औरकटोँ पर एक नजर

► 1 करोड़ से रुपए अधिक : अनुमानित वार्षिक टर्नओवर।

► 50 से अधिक : आदिवासी महिलाएँ सीधे रोजगार से जुड़ी हुई हैं।

► लगभग 100 परिवार : प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष आजीविका के माध्यम से सकारात्मक रूप से प्रभावित हुए हैं।

संपूर्ण सामूहिक मूल्य श्रृंखला

► 1. स्थानीय उत्पादन : आदिवासी खेतों से ताज़ी सामग्री प्राप्त करना।

► 2. आदिवासी उद्यम : महिला सखी मंडलों द्वारा प्रसंस्करण, खाना पकाने और आपूर्ति का प्रबंधन।

► 3. पारंपरिक व्यंजन : आगंतुकों को असली नागली की रोटी, दालें और लड्डू

भाजपा के पूर्व अध्यक्ष ने सूरत के चौटा बाजार में दबाव कम करने के लिए नगर आयुक्त को पत्र लिखा है

(निडर, निष्पक्ष और तटस्थ

छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत

भाजपा के पूर्व नगर अध्यक्ष नितिन

भाजियावाला ने सूरत नगर आयुक्त को

पत्र लिखकर चौटा बाजार के प्रदूषण को

स्थायी रूप से हटाने का अनुरोध किया

है। साथ ही, एसएमसी के निर्वाचित

पदाधिकारियों और जिम्मेदार अधिकारियों

को बार-बार इस प्रदूषण को हटाने के

लिए सूचित करने के बावजूद, यह प्रदूषण

अभी भी जारी है। व्यवस्था को उदासीनता,

रिक्वजिरी के गठजोड़ और वोट की

राजनीति के चलते विवेणी संगम जैसी

शुतरुमर्ग नीति के कारण वहां चौटा बाजार

का अस्तित्व ही नहीं है।

स्थानीय लोगों ने भी पश्चाताप व्यक्त करते हुए गुहार लगाई है।

महज चार दिन पहले, हॉर्न बजाने के

बावजूद पुलिसकर्मी को चौटा बाजार से

निकलने में एक घंटा लग गया। इतना ही

नहीं, चौटा बाजार में वर्षों से मौजूद एक

अस्पताल की एम्बुलेंस को भी रोजाना इस

परेशानी का सामना करना पड़ता है। फिर

भी, इस समस्या का स्थायी समाधान करने के लिए कोई आगे नहीं आया है।

इस प्रकार, एक ओर तो हम चौटा बाजार

में होने वाले दबावों की बुगइयों की बात

करते हैं, वहीं दूसरी ओर यह भी कहा

ड्राइविंग लाइसेंस नियमों में बदलाव का प्रस्ताव; आधार के माध्यम से मुफ्त ऑनलाइन सेवाएं प्रदान करने की तैयारी

(निर्भोक्त, निष्पक्ष एवं तटस्थ

छगनलाल मेवाड़ा) सूरत

केंद्र सरकार ने केंद्रीय मोटर वाहन

नियम 1989 में व्यापक संशोधन के

तहत कई ड्राइविंग लाइसेंस सेवाओं

को मुफ्त करने और लॉगिंग लाइसेंस

प्राप्त करने की आवश्यकताओं को

सख्त करने का प्रस्ताव दिया है।

केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग

मंत्रालय ने इसके लिए एक मसौदा

अधिसूचना जारी की है।

यह सेवा भी नि:शुल्क होगी; साथ ही

पता, मोबाइल नंबर या ईमेल आईडी

अपडेट करने के लिए कोई शुल्क नहीं

वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट 2027 से पहले एयरोस्पेस और रक्षा विनिर्माण के क्षेत्र में भारत के प्रमुख केंद्र के रूप में गुजरात की स्थिति और मजबूत

वडोदरा में स्थापित टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स-एयरबस C-295 फाइनल असेंबली लाइन (FAL) जैसी महत्वपूर्ण परियोजनाओं से गुजरात को मिल रही बढ़त

गांधीनगर : गुजरात भारत की औद्योगिक विकास यात्रा में हमेशा से अग्रणी और सशक्त साझेदार राज्य रहा है। अपनी इसी दक्षता और दूरदृष्टि वाले विजन को आगे बढ़ाते हुए अब गुजरात तेजी से एयरोस्पेस और रक्षा (A&D) क्षेत्रों में विनिर्माण और नवाचार के प्रमुख केंद्र के रूप अपनी स्थिति मजबूत करने की दिशा में अग्रसर

रह रही है। वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट 2027 भारत के उभरते रणनीतिक महत्व को क्षेत्रों के प्रति वैश्विक समुदाय का ध्यान केन्द्रित

कर रही है। इस बीच गुजरात विश्वस्तरीय कलपुर्जाओं की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित कर रहे हैं। ये सक्षम एमएएमएई अपने कार्य-

वडोदरा में स्थापित टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स-एयरबस C-295 फाइनल असेंबली लाइन (FAL) गुजरात के इस दिशा में मजबूत आधार का प्रमाण है। देश में निजी क्षेत्र की पहली सैन्य विमान फाइनल असेंबली लाइन के रूप में यह संयंत्र घरेलू एयरोस्पेस आपूर्ति शृंखला को तेजी से आगे बढ़ा रहा है। इतना ही नहीं यह विमान संचनाओं, कलपुर्जों, सटीक इंजीनियरिंग और रक्षा इलेक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र में विश्वस्तरीय विशेषज्ञता का प्रदर्शन करता है। गुजरात सिर्फ विमान विनिर्माण तक सीमित नहीं है, बल्कि मानवह्रित हवाई निर्माण (UAVs), एयरोस्पेस उपकरण निर्माण, रख-रखाव, मरम्मत एवं ओवरहॉल (MRO) सेवाओं, उन्नत सामग्रियों और उच्च कोशल वाले इंजीनियरिंग कार्यों के क्षेत्रों में भी दृढ़ता के साथ क्षमता विस्तार कर रहा है। इस प्रमुख परियोजना के साथ-साथ अन्यभर में एयरोस्पेस और रक्षा (A&D) क्षेत्र के उद्यमों का एक सशक्त

पारिस्थितिकी तंत्र विकसित हो रहा है।

लासॉन एंड टुब्रो (L&T) तोप, बख्तरबंद प्रणालियों और शस्त्र प्रक्षेपण प्रणालियों का

विनिर्माण कर रही है, जिससे 381 रोजगार सृजित हो रहे हैं।

दूसरी ओर, रैस्पियन एंटरप्राइजेज (Raspian

Entreprizes) छोटे हथियारों और एस्ट्रोनॉमिक्स (Astronotics) (FMJ projectiles) पर

प्रक्षेप्यों के क्षेत्र में गुजरात के शस्त्र एवं गोला-बारूद आधार को मजबूत

कर रही है। जैवैल एयरोस्पेस (Jaivel Aerospace), श्रीराम एयरोस्पेस एंड

डिफेंस (Shreeram Aerospace & Defence), यूनिक फोर्ज (Unique

Forge) और पुष्पक एयरोस्पेस (Pushpak Aerospace) जैसे सूक्ष्म,

लघु एवं मध्यम उद्यम (MSMEs) के

इन प्रमुख औद्योगिक इकाइयों को सटीक कलपुर्जा की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित कर

रहे हैं। ये सक्षम एमएएमएई अपने कार्य-क्षमता को तेजी से आगे बढ़ा रहा है। इतना ही नहीं यह विमान संचनाओं, कलपुर्जों, सटीक इंजीनियरिंग और रक्षा इलेक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र में विश्वस्तरीय विशेषज्ञता का प्रदर्शन करता है। गुजरात सिर्फ विमान विनिर्माण तक सीमित नहीं है, बल्कि मानवह्रित हवाई निर्माण (UAVs), एयरोस्पेस उपकरण निर्माण, रख-रखाव, मरम्मत एवं ओवरहॉल (MRO) सेवाओं, उन्नत सामग्रियों और उच्च कोशल वाले इंजीनियरिंग कार्यों के क्षेत्रों में भी दृढ़ता के साथ क्षमता विस्तार कर रहा है। इस प्रमुख परियोजना के साथ-साथ अन्यभर में एयरोस्पेस और रक्षा (A&D) क्षेत्र के उद्यमों का एक सशक्त

पारिस्थितिकी तंत्र विकसित हो रहा है।

लासॉन एंड टुब्रो (L&T) तोप, बख्तरबंद प्रणालियों और शस्त्र प्रक्षेपण प्रणालियों का

विनिर्माण कर रही है, जिससे 381 रोजगार सृजित हो रहे हैं।

दूसरी ओर, रैस्पियन एंटरप्राइजेज (Raspian

Entreprizes) छोटे हथियारों और एस्ट्रोनॉमिक्स (Astronotics) (FMJ projectiles) पर

प्रक्षेप्यों के क्षेत्र में गुजरात के शस्त्र एवं गोला-बारूद आधार को मजबूत

कर रही है। जैवैल एयरोस्पेस (Jaivel Aerospace), श्रीराम एयरोस्पेस एंड

डिफेंस (Shreeram Aerospace & Defence), यूनिक फोर्ज (Unique

Forge) और पुष्पक एयरोस्पेस (Pushpak Aerospace) जैसे सूक्ष्म,

लघु एवं मध्यम उद्यम (MSMEs) के

इन प्रमुख औद्योगिक इकाइयों को सटीक कलपुर्जा की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित कर

रहे हैं। ये सक्षम एमएएमएई अपने कार्य-क्षमता को तेजी से आगे बढ़ा रहा है। इतना ही नहीं यह विमान संचनाओं, कलपुर्जों, सटीक इंजीनियरिंग और रक्षा इलेक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र में विश्वस्तरीय विशेषज्ञता का प्रदर्शन करता है। गुजरात सिर्फ विमान विनिर्माण तक सीमित नहीं है, बल्कि मानवह्रित हवाई निर्माण (UAVs), एयरोस्पेस उपकरण निर्माण, रख-रखाव, मरम्मत एवं ओवरहॉल (MRO) सेवाओं, उन्नत सामग्रियों और उच्च कोशल वाले इंजीनियरिंग कार्यों के क्षेत्रों में भी दृढ़ता के साथ क्षमता विस्तार कर रहा है। इस प्रमुख परियोजना के साथ-साथ अन्यभर में एयरोस्पेस और रक्षा (A&D) क्षेत्र के उद्यमों का एक सशक्त

पारिस्थितिकी तंत्र विकसित हो रहा है।

लासॉन एंड टुब्रो (L&T) तोप, बख्तरबंद प्रणालियों और शस्त्र प्रक्षेपण प्रणालियों का

विनिर्माण कर रही है, जिससे 381 रोजगार सृजित हो रहे हैं।

दूसरी ओर, रैस्पियन एंटरप्राइजेज (Raspian

Entreprizes) छोटे हथियारों और एस्ट्रोनॉमिक्स (Astronotics) (FMJ projectiles) पर

प्रक्षेप्यों के क्षेत्र में गुजरात के शस्त्र एवं गोला-बारूद आधार को मजबूत

कर रही है। जैवैल एयरोस्पेस (Jaivel Aerospace), श्रीराम एयरोस्पेस एंड

डिफेंस (Shreeram Aerospace & Defence), यूनिक फोर्ज (Unique

Forge) और पुष्पक एयरोस्पेस (Pushpak Aerospace) जैसे सूक्ष्म,

पश्चिम रेलवे यात्रियों एवं रेल कर्मचारियों को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है। इसी क्रम में, नियमित पेयजल गुणवत्ता निगरानी कार्यक्रम के अंतर्गत पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल द्वारा 17 से 24 अक्टूबर, 2026 तक पेयजल गुणवत्ता के कुल 529 परीक्षण किए गए, जिनके सभी परिणाम संतोषजनक पाए गए।

अहमदाबाद मंडल में 17 से 24 अक्टूबर, 2026 के दौरान पेयजल गुणवत्ता के कुल 529 परीक्षण किए गए, जिनमें 466 अवशिश्ट क्लोरीन (Residual Chlorine) परीक्षण तथा 63 बैक्टीरियोलॉजिकल परीक्षण शामिल थे। सभी परीक्षणों के परिणाम संतोषजनक रहे, जिससे दोनों परीक्षण मानकों में 100% अनुपालन दर्ज किया गया।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में राज्य के यात्राधामों में ‘प्रसाद के साथ प्रकृति का जतन’ होगा

सोमनाथ मंदिर में सफल इको-फ्रेंडली प्रसाद पैकेजिंग मॉडल अब अंबाजी मंदिर में अपनाया जाएगा

गांधीनगर : श्री सोमनाथ मंदिर में इको-फ्रेंडली प्रसाद पैकेजिंग की सफलता के बाद गुजरात प्रदूषण निर्वन्धन बोर्ड (जीपीसीबी) अब इस मॉडल को श्री आरासुरी अंबाजी माता मंदिर में शीघ्र ही लागू करेगा। इस पहल का उद्देश्य मंदिर में चढ़ाए जाने वाले प्रसाद की पैकेजिंग में सिंगल-यूज प्लास्टिक के उपयोग को कम करना है।

जीपीसीबी द्वारा अहमदाबाद स्थित नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन (एनआईडी) की मदद से तैयार किए गए विकल्पों में गन्ने के वेस्ट से बनाए गए कंटेनर तथा दोबारा उपयोग में लिए जा सकने वाले टिन के कंटेनर शामिल हैं। इस पहल का उद्देश्य प्लास्टिक कचरे को समाप्त कर यात्राधामों में इको-फ्रेंडली प्रबंधन को प्रोत्साहित करना है। साथ ही, प्रसाद वितरण की परंपरा के सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक महत्त्व को बनाए रखने का भी प्रयास है।

यह पहल प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की पर्यावरण के प्रति जागरूक जीवनशैली, जिम्मेदार उपभोग और जनभागीदारी के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण की परिकल्पना को साकार करने की दिशा में है। उनके इस विजन को मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में राज्यभर में ठोस पर्यावरणीय कदमों के माध्यम से मूर्तरूप दिया जा रहा है।

श्री सोमनाथ मंदिर में अब प्रसाद का वितरण प्लास्टिक-मुक्त कागज के बॉक्स और दोबारा उपयोग में लिए जा सकने वाले टिन के डिब्बों में किया जाता है। इस नई इको-फ्रेंडली प्रसाद पैकेजिंग व्यवस्था का उद्घाटन मुख्यमंत्री श्री

भूपेंद्र पटेल के करकमलों से 17 सितंबर, 2026 को किया गया था। सोमनाथ मंदिर में प्रतिदिन लगभग 4,200 किलोग्राम प्रसाद का वितरण लगभग 27,700 बॉक्स द्वारा किया जाता है। प्लास्टिक के पात्रों को हटाकर टिकाऊ विकल्पों का उपयोग करने से हर वर्ष 203 टन से अधिक प्लास्टिक के उपयोग को रोका जा सकेगा।

अंबाजी मंदिर में सोमनाथ मॉडल लागू करने की तैयारी

सोमनाथ मंदिर में मिली सफलता के आधार पर जीपीसीबी श्री आरासुरी अंबाजी माता मंदिर में भी इसी तरह की पैकेजिंग व्यवस्था लागू करेगा।

वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री अर्जुन मोदवाडिया ने कहा, “अंबाजी मंदिर में सामान्य दिनों में लगभग 15,000 प्लास्टिक के प्रसाद बॉक्स का उपयोग होता है, जबकि त्योहारों एवं विशेष अवसरों पर इसकी मांग में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। हर महीने लगभग 10 लाख बॉक्स वितरित किए जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप पैकेजिंग के कारण अनुमानित 11,299.5 किलोग्राम प्रसाद के प्रसाद बॉक्स का उपयोग होता है।”

श्री अर्जुन मोदवाडिया ने आगे कहा, “प्रसाद वितरण में इको-फ्रेंडली विकल्प अपनाने से अंबाजी में हर वर्ष लगभग 135.6 टन प्लास्टिक कचरा को रोका जा सकेगा। इन पैकेजिंग विकल्पों को इस तरह तैयार किया गया है कि वे प्रसाद वितरण के लिए आवश्यक सज्जता, कार्यक्षमता और सुविधा बनाए रखने के साथ-साथ उसकी सांस्कृतिक पहचान को भी संरक्षित रखें।”

धार्मिक संस्थाएँ लोगों के व्यवहार को प्रभावित करने की क्षमता रखती हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए जीपीसीबी ने अध्ययन किया कि प्रसाद रखने और ले जाने की परंपरागत पद्धति में पर्यावरणीय जिम्मेदारी को किस प्रकार शामिल किया जा सकता है। इस पहल का उद्देश्य पारंपरिक प्लास्टिक के पात्रों को ऐसी पैकेजिंग से बदलना है, जो पर्यावरण के अनुकूल, सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त और मंदिर की कार्यप्रणाली के लिए व्यावहारिक हो।

एनआईडी द्वारा पर्यावरण-मित्र पैकेजिंग के विकल्प तैयार

उपयुक्त विकल्प विकसित करने के लिए जीपीसीबी ने अहमदाबाद स्थित एनआईडी की इंटीग्रेटेड डिजाइन सर्विसेज की पेशेवर डिजाइन कंसल्टेंसी के अंतर्गत सहायता ली थी।

श्री सोमनाथ मंदिर और श्री आरासुरी अंबाजी माता मंदिर में स्थल पर अध्ययन किया गया था। इस अध्ययन में श्रद्धालुओं की आवाजाही, प्रसाद की मात्रा, प्रसाद बनाने और पैक करने की प्रक्रिया, भंडारण की स्थिति, वितरण की पद्धतियों तथा वर्तमान में उत्पन्न होने वाले कचरे की स्थिति का मूल्यांकन किया गया था। अध्ययन में पाया गया कि सभी आवश्यकताओं के लिए एक ही प्रकार की पैकेजिंग उपयुक्त नहीं हो सकती। तत्काल उपयोग के लिए प्रसाद की पैकेजिंग हल्की और जैव-विघटनीय होनी आवश्यक थी, जबकि घर ले जाने या लंबी दूरी तक ले जाने वाले प्रसाद के लिए अधिक मजबूत और टिकाऊ पात्रों की आवश्यकता थी। इसलिए

